HISTORY, B.A. PART-I, PAPER-I

Describe Chandragupta II's military achievements (चन्द्रगुप्त द्वितीय की सैन्य उपलब्धियों का वर्णन करें।)

चन्द्रगुप्त द्वितीय गुप्त वंश के महानतम् सम्राटों में से एक है। कुछ समय पूर्व तक इतिहासकारों का मत था कि समुद्रगुप्त की मृत्यु के पश्चात् चन्द्रगुप्त द्वितीय शासक बना था, परन्तु नवीन साहित्यिक एवं पुरातात्विक सामग्री के प्रकाश में आने पर यह माना जाने लगा है कि समुद्रगुप्त के पश्चात् रामगुप्त शासक बना था, जो समुद्रगुप्त का बड़ा पुत्र था। चन्द्रगुप्त द्वितीय रामगुप्त का छोटा भाई था तथा उसके अल्पकालीन शासन के पश्चात् सिंहासनारूढ़ हुआ।

चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल की सर्वप्रमुख घटना उसके द्वारा शकों को पराजित किया जाना था। समुद्रगुप्त ने यद्यपि भारत के विस्तृत भू-भाग पर विजय प्राप्त की थी, किन्तु उसकी विजयों का गुजरात एवं काठियावाड़ में शासन कर रहे शकों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा था। चन्द्रगुप्त द्वितीय भारत से विदेशी-राज्य को पूर्णतः समाप्त करना चाहता था तथा वाकाटकों के गुप्तों के सहयोगी (विवाह-सम्बंध द्वारा) बन जाने के कारण चन्द्रगुप्त II के लिए शकों को पराजित करने का कार्य सुगम हो गया था।

वाकाटकों से सहयोग प्राप्त करने के उपरान्त चन्द्रगुप्त द्वितीय ने सर्वप्रथम मालवा पर अधिकार किया तथा मालवा को आधार बनाकर चन्द्रगुप्त ने शकों पर आक्रमण किया। इस युद्ध में चन्द्रगुप्त II ने शकों को पराजित किया तथा शकराज रुद्रसिंह तृतीय मारा गया। तत्पश्चात् चन्द्रगुप्त द्वितीय ने शक-राज्य को गुप्त-साम्राज्य में मिला लिया। इस प्रकार शक-सत्ता का भारत से उन्मूलन करने में चन्द्रगुप्त द्वितीय सफल हुआ। इसी विजय के उपरान्त चन्द्रगुप्त द्वितीय ने "शकारि" उपाधि धारण की थी। चन्द्रगुप्त II की "विक्रमांक" एवं "विक्रमादित्य" उपाधियाँ इसी विजय के ~~उपरान्त धारण~~ की ओर संकेत करती हैं क्योंकि भारतीय परम्परा के अनुसार 57 ई०पू० में राजा ~~विक्रमादित्य~~ विक्रमादित्य ने भी इसी प्रकार शकों का उन्मूलन किया था, अतः सम्भवतः चन्द्रगुप्त द्वितीय ने इसी कारण से उपाधियां धारण की होंगी। डॉ० मजूमदार ने इस विषय में लिखा है कि "चन्द्रगुप्त द्वितीय के द्वारा धारण किये गये विरुद युद्धस्थल में प्राप्त उस यश के परिचायक हैं जो हिन्दू पौराणिक गाथाओं में उच्चतम आदर्शों के प्रतीक स्वीकार किये जाते हैं।"

चन्द्रगुप्त द्वितीय की शकों पर विजय का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व है। इसी कारण वी० ए० स्मिथ ने चन्द्रगुप्त की इस विजय को उसकी महानतम् विजय कहा है। इस विजय के परिणामस्वरूप तीन शताब्दियों से भी पुराने विदेशी राज्य का पश्चिमी भारत से लोप हो गया। इसके अतिरिक्त, इस विजय के परिणामस्वरूप ही गुप्त साम्राज्य की सीमाएँ गुजरात, काठियावाड़, तथा पश्चिमी मालवा तक विस्तृत हो गईं।

Ajanta PRODUCTS Lovely

→

Scanned with CamScanner

उपर्युक्त राजनीतिक महत्व के अतिरिक्त शक-विजय का आर्थिक एवं सांस्कृतिक महत्व भी है। इस विजय के परिणामस्वरूप गुप्त-साम्राज्य के अधीन भृगुकच्छ (भड़ौंच) का बन्दरगाह भी आ गया। इस बन्दरगाह से ही भारत का पश्चिमी देशों के लिए व्यापार होता था। इस प्रकार इस व्यापार पर गुप्तों का नियंत्रण हो गया जिससे आर्थिक लाभ के साथ-साथ उनकी ख्याति पश्चिमी देश में भी पहुँचने लगी।

अन्य विजय :- (i) गणराज्यों पर विजय - समुद्रगुप्त ने अपने विजय-अभियान के द्वारा अनेकानेक गणराज्यों को अपनी अधीनता स्वीकार करने के लिए विवश किया था, किन्तु उन्हें गुप्त-साम्राज्य में विलीन नहीं किया था। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने इन गणराज्यों पर विजय प्राप्त करके गुप्त साम्राज्य में मिला लिया।

(ii) वाह्लीक विजय :- महरौली स्तम्भ लेख में कहा गया है कि चन्द्रगुप्त ने सिन्धु के पाँच मुखों को पार कर वाह्लीकों पर विजय प्राप्त की थी। डॉ० मजूमदार आदि कुछ विद्वानों ने वाह्लीक का समीकरण वैक्ट्रिया से किया है और इस प्रकार चन्द्रगुप्त को वैक्ट्रिया पर विजय प्राप्त करने का श्रेय दिया है, किन्तु अनेक विद्वान इस मत से सहमत नहीं हैं। प्रो० पू. एन. राय ने लिखा है कि वाह्लीक-विजय से तात्पर्य वाह्लीक जाति से जो उस समय भारत वर्ष में महत्वपूर्ण सत्ता के रूप में शासन कर रही थी।

(iii) पूर्वी प्रदेशों पर विजय :- महरौली स्तम्भ लेख से ही चन्द्रगुप्त II को पूर्वी प्रदेशों पर विजय के विषय में पता चलता है। ऐसा प्रतीत होता है कि रामगुप्त के शासन काल में उसकी दुर्बलता से लाभ उठाकर समुद्रगुप्त द्वारा पराजित बंगाल एवं अन्य पूर्वी प्रदेशों के शासकों ने एक संघ बना लिया। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने इस संघ को परास्त किया। इस प्रकार इस विजय से सम्पूर्ण वंग-प्रदेश पर गुप्तों का आधिपत्य हो गया तथा ताम्रलिप्ति का महत्वपूर्ण बन्दरगाह भी गुप्तों के अधीन हो गया।

(iv) दक्षिणापथ से सम्बंध :- महरौली स्तम्भ लेख में कहा गया है कि चन्द्र के प्रताप से दक्षिणी सागर सुगन्धित हो उठा था। इस आधार पर कुछ इतिहासकारों का विचार है कि चन्द्रगुप्त ने दक्षिणापथ के राजाओं को भी परास्त किया था, किन्तु इस मत को स्वीकार करना कठिन है क्योंकि किसी अन्य स्रोत से इसकी पुष्टि नहीं होती। चन्द्रगुप्त II के साम्राज्य की सीमाएँ अरब सागर एवं बंगाल की खाड़ी तक विस्तृत थी, अतः सम्भव है महरौली स्तम्भ लेख इसी ओर संकेत करता हो।

(v) अश्वमेध यज्ञ :- काशी के समीप भीटा नामक स्थान से एक अश्व की मूर्ति प्राप्त हुई है जिस पर "चन्द्रगु:" उत्कीर्ण है। इस आधार

पर कुछ इतिहासकारों का विचार है कि चन्द्रगुप्त II ने एक ~~विशाल गुप्त साम्राज्य की~~ अश्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान अपनी विजयों के उपरान्त किया था, परन्तु घोड़े की मूर्ति पर उत्कीर्ण शब्द का पाठ एवं उस नाम का चन्द्रगुप्त द्वितीय से समीकरण संदिग्ध है।

अपनी विजयों के परिणामस्वरूप चन्द्रगुप्त द्वितीय ने एक विशाल गुप्त साम्राज्य की स्थापना की। उसका राज्य पश्चिम में गुजरात से लेकर पूर्व में बंगाल तक तथा उत्तर में हिमालय की तलहटी से दक्षिण में नर्मदा नदी तक विस्तृत था।

मूल्यांकन:- चन्द्रगुप्त II की गणना प्राचीन भारत के महानतम शासकों में की जाती है। चन्द्रगुप्त II एक कुशल योद्धा व महत्वाकांक्षी शासक था तथा अपनी विजयों द्वारा एक विशाल गुप्त-साम्राज्य की स्थापना करने में वह सफल रहा। आर्यावर्त को एक राजनीतिक सूत्र में आबद्ध करने का जो कार्य समुद्रगुप्त ने प्रारम्भ किया था, उसे उसके महान् पुत्र चन्द्रगुप्त द्वितीय ने पूरा कर दिखाया। चन्द्रगुप्त II की दिग्विजय ने उत्तरी भारत को एक शासन सूत्र में ग्रथित कर राष्ट्र को मात्र राजनीतिक एकता ही प्रदान नहीं की वरन् आर्थिक समृद्धि के द्वार भी खोल दिये। गुजरात एवं काठियावाड़ के गुप्त-साम्राज्य में मिला लिये जाने से वहाँ के प्रसिद्ध बन्दरगाहों से होने वाले व्यापार की आय अब शकों के स्थान पर गुप्त-साम्राज्य को समृद्ध करने लगी। इस प्रकार शकों को उन्मूलित कर चन्द्रगुप्त II ने पश्चिमी भारत से विदेशी सत्ता समाप्त करने के साथ ही भारत को समृद्धशाली बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। डॉ० आर० सी० मजूमदार ने चन्द्रगुप्त II की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि "राजनीतिक महत्ता और सांस्कृतिक पुनरुत्थान के युग को सम्पूर्ण करने वाला चन्द्रगुप्त II अपनी प्रजा के हृदय में भी स्थान प्राप्त करने में सफल हुआ।"

चन्द्रगुप्त II वैष्णव धर्मावलम्बी था, किन्तु वह एक धर्मसहिष्णु था। उसके राज्य में अनेक उच्च पदों पर अन्य धर्मों के लोग आसीन थे। चन्द्रगुप्त II विद्या-प्रेमी व विद्वानों का आश्रयदाता भी था। उसके राजदरबार में अनेक विद्वान थे जिनमें कालिदास एवं धनवन्तरि प्रमुख हैं।

निःसंदेह, चन्द्रगुप्त II एक महान् पिता का महान् पुत्र प्रमाणित हुआ। शासन और समर दोनों में उसकी ख्याति एवं कृति उसके पिता समुद्रगुप्त की भाँति ही सुप्रसिद्ध एवं सुचर्चित है। गुप्त सम्राटों में समुद्रगुप्त की तरह स्वभुज बल-विक्रम द्वारा समस्त शत्रुओं को उन्मूलित कर "सर्वराजोच्छेत्ता" की उपाधि धारण करने वाला दूसरा सम्राट् हुआ है। चन्द्रगुप्त द्वितीय एक महान् विजेता, अतुल पराक्रमी और धर्मनिष्ठ शासक था, यह निर्विवाद है।"

S. V. Anil
20.5.20

Scanned with CamScanner